बैतूल जिले में मुलताई ब्लॉक के चौथिया गांव में सामुदायिक निगरानी ने बढ़ाया शौचालय उपयोग

मध्यप्रदेश का आदिवासी बाहुल्य जिला है बैतूल जिसके दक्षिणी छोर पर मुलताई विकासखण्ड का एक गांव है चौथिया अन्य गांवों की तरह इस गांव के 238 परिवारों में से ज्यादातर परिवार खुले में शौच करते थे। लोगों ने स्वयं और प्रशासन ने शौचालय तो बनवाता था लेकिन इसके उपयोग में लोगों की दिलचस्पी कम थी।

मध्यप्रदेश सरकार ने वर्ष 2014 में एक महत्वूपर्ण निर्णय लिया जिससे "स्वच्छता कार्यक्रम" में समुदाय के नेतृत्व विकास एवं समुदायिक स्वामित्व के भाव का विकास हो। इसके लिए मध्यप्रदेश सरकार द्वारा विकासखण्ड स्तर पर समुदाय प्रेरिकरण विधाओं में प्रशिक्षित प्रेरकों के दल का निर्माण कर ग्रामों में समुदाय आधारित स्वच्छता पद्धतियों से कियान्वयन हेतु रणनीति बनाई गई। इसी क्रम में प्रथम चरण में राज्य से 7 जिलों में यह प्रकिया प्रारंभ की गई है जिसमें बैतुल एक जिला है और प्रगति की ओर अग्रसर है।

शौचालय निर्माण के लिए प्रेरित करने तथा शौचालय उपयोग में ग्राम समुदाय को नेतृत्व ओर जबावदेही निर्वाह करने हेतु प्रेरित करने के लिए प्रत्येक विकासखण्ड से 3–4 इच्छुक व्यक्तियों का जिला स्तर पर चयन किया जाकर समुदाय अभिप्रेरण पद्धतियों का राज्य स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। इसी प्रशिक्षण में प्रशिक्षित श्री कचरू बांरगें ने चौथिया के ग्रामवासियों को खुले में शौच करने की प्रवृत्ति को शर्म एव घृणा के विचारों से ट्रिगर किया। यह कार्य आसान नहीं था। उन्होंने अपनी एक टोली बनाकर मुहल्लों में जा–जाकर पुरूषों, महिलाओं व बच्चों को शौच स्थान पर ले जाकर समझाया कि कैसे बाहर किया गया शौच हमारे शरीर को विशान्त करता है और कैसे अनजाने ही हम एक दूसरे का मल खा रहे हैं। उन्होंने अपने ब्लाक की ही एक महिला अनिता नारे का उदाहरण दिया कि कैसे उन्होंने बाहर शौच करने मना करने पर अपने घर को छोड़ पति को शौचालय निर्माण हेतु विवश कर देश में ख्याति प्राप्त की। इस प्रकार के उदाहरणों से श्री कचरू और उनकी टीम ने लोगों को न केवल यह समझाया कि हमें स्वयं के साधनों और स्वच्छ भारत मिशन की सहायता राशि से शौचालय बनाना चाहिए बल्कि यह समझाने में भी कामयाब हुए कि खुले में शौच एक सामूहिक समस्या है और सामूहिक प्रयास और निगरानी से ही गांव मलजनित बीमारी से मुक्त हो सकता है।

उनके इस प्रयास से गांव में महिलाओं और पुरूषों के दो निगरानी दल बन गए। पुरूष दल का नेतृत्व मंचितलात, धनराज, रमेश, सुमरन, संतोष, कमलेश, गुरू कर रहे थे जबकि महिला निगरानी दल में राधा, सयाबाई, रूकमणि, वेदि, बेबी, अंजु, ललिता, गायत्री और रामप्यारी शामिल थी। ये सब शौच के समय बाहर जाने वालो का शौचालय बनाने और जिनके पास शौचालय है उसका उपयोग करने हेतु बिनती करने लगे। गांव की सरपंच भी इसमें शामिल हुई लोगो में मांग बढ़ी तो उन्होने सरकारी मदद से शौचालय बनवाना शुरू किया। इस बीच जो बाहर जा रहे थे उनके शौच पर यही दल मिट्टी डालकर ढकने लगा। करीब डेढ़ महीने में सभी के यहा शौचालय बन गए।

इसके बाबजूद कई लोग ऐसे थे जो बाहर जाना नहीं बंद कर रहे थे। ग्राम पंचायत में सरपंच की अध्यक्षता में बैठक हुई जिसमें निर्णय हुआ कि गांव में लाउड स्पीकर से उनके नाम को उद्घोषित किया जाए। इसके लिए एनाउन्सर को सूचना मोबाईल से दी जाती ओर एनाउन्सर शुरू हो जाता इसमें यह समझाया जाता कि शौचालय होने पर भी शौच के लिए बाहर जाना नहीं चाहिए। नाम एनाउन्स होने की बदनामी ने ऐसे लोगों के भी शौचालय जाने पर मजबूर कर दिया जो शौचालय में जाना पंसद नहीं करते थे।

प्रेरकों के दल और निगरानी समिति को जिला एवं ब्लॉक पंचायत के अधिकारियों ने न केवल शासकीय धन को पंचायत को उपलब्ध कराकर मदद की बल्कि शौचालय निर्माण की सामग्री तथा राजमिस्त्री उपलब्ध करवाकर शौचालय बनवाने एवं सबेरे की निगरानी में शामिल होकर उनके होसले को बढ़ाने तथा उनकी गतिविधियों को वेद्यता प्रदान करने में मदद की।

दिसम्बर 2014 में चौथिया में कार्य प्रारम्भ हुआ तथा अल्पावधि में खुले में शौच मुक्त ग्राम बन गया। कचरू बारंगें और उनके साथियों का दल स्वच्छता दूत के रूप में उभरे हैं जो स्वच्छता में समुदाय की भूमिका की न केवल समझ रखते है बल्कि उन्होने इसे जमीन पर क्रियान्वित कर यह आश जगाई है कि सरकारी प्रयासों से कचरन जैसे ग्रामीण स्वयं सेवको को जोड़कर स्वच्छ भारत अभियान को जनांदोलन बनाया जा सकता है।

बैतूल जिले के कलेक्टर श्री ज्ञानेश्वर पाटिल इस प्रक्रिया में गहरी दिलचस्पी लेते हुए इस पूरे जिले में सुनियोजित रूप से फैला रहे हैं। वे न केवल ग्रामीण प्रेरको से सीधे बात कर उन्हे प्रोत्साहित करते रहते हैं बल्कि सार्वजानिक समारोहों में इन्हे पुरस्कृत करते हैं। इसके अतिरिक्त अभियान से मिलने वाली धनराशी पंचायतो को शीघ्रता से उपलब्ध हो, हितग्राहियों के लिए ग्राम पंचायते गुणवत्तापूर्ण सामग्री खरीदें और प्रशिक्षित राजमिस्त्रियों से बेहतर शौचालय का निर्माण हो इसके लिए ब्लाक अधिकारियो, स्वच्छता समन्वयकों तथा तकनीकि अधिकारियों के दायित्वों का निर्धारण कर क्रियान्वयन की समीक्षा करते हैं।

इस अभियान में दो संस्थाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। मध्यान्ह भोजन की महिला स्वसहायता समूह और जनअभियान परिषद के ग्रामीण प्रस्फुटन समिति का। इस सदस्यों ने सुबह शाम निगरानी दल के साथ मिलकर बाहर शौच जाने वालों को रोकने में और शौचालय निर्माण हेतु प्रेरित करने में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया।

बैतूल जिले के मुलताई ब्लाक के 12 ग्राम पंचायतों में इसी विधि से शौचालय निर्माण और शौचालय उपयोग का अभियान चल रहा है। अगले 2–3 महीनों में ये सभी ग्राम पंचायते खुले में शौच मुक्त हो जाएगी। इस गतिविधि से प्राप्त सीख और दृढ़निश्चयी स्वच्छता दूतों का प्रेरक दल के रूप में उपयोग कर सम्पूर्ण बैतूल जिले को खुले में शौच मुक्त बनाने का लक्ष्य है। शुरूआत हो गई है तो परिणाम हासिल होकर रहेगा।

लेंदागोंदी भी इसी प्रकार की गतिविधियों द्वारा 02 माह से कम समय में खुले में शौच मुक्त बना। ग्राम में न केवल 100 से ज्यादा शौचालय बने बल्कि सभी ने इसका उपयोग किया। वहाँ महिलाओं और बच्चों के समूह ने बाहर शौच करने जाने वाले के सामने ताली बजाबजा कर शर्मशार किया। नतीजतन चाहे 50 वर्ष के भाऊजी हो या 50 वर्ष की कनोती बाई, इनके जैसे सैकड़ों ग्रामीणों ने बाहर शौच करना बंद किया। पूछने पर वे कहते हैं कि पहले जब महिलाएँ, बच्चे ताली बजाते तो गुस्सा आया फिर शर्म आने लगी और हमने शौचालय के उपयोग पर और जिनके पास नहीं थ उन्होनें बनवाने पर ध्यान दिया। अब इन्हें अच्छा लगता है। इन्होंने अपना संस्कार बदला तो गांव में एक गर्व यात्रा निकली और नारा लगा – बंद कर दी, बंद कर दी, खुले में ट्टी बन्द कर दी।

जिला बैतुल में इसी प्रकार कुशल प्रेरकों के सहयोग से समुदाय की भागीदारी के साथ एवं प्रशासन के कुशल नेतृत्व में कई ग्राम सम्पूर्ण स्वच्छता की और धीरे धीरे किन्तु ठोस कदम बढ़ा रहें हैं।

TOILET TRAINING

MP village catching open defecators with pants down

Shruti Tomar and Rajesh Bhatia

BHOPAL/BETUL: It's not a nice way to start the day, caught with the pants down. Or with the dhoti up, all ends entangled in the legs.

Residents of Chauthiya village in Betul district are discovering to their dismay that they will no longer be able to defecate in the open and get away with their unsanitary habit.

Thanks to a novel idea by the woman sarpanch, every time a resident of the village takes that trademark water container and walks towards the fields early in the morning, details of their movements are broadcast 'live' on a public address system.

And the running commentary – the villagers start running – is starting to show results.

A villager, Kachroo Barange, said:

"Not only are the names of offenders announced but a running commentary is done on their movements. This truly embarrasses them and most of them have stopped the practice."

The drastic step was adopted after the panchayat failed to make many a villager use the public or personal toilets built in Chauthiya in the recent past.

"We tried our best to get them to use the toilets. First we started taking photographs of offenders on mobile phones and made them public. Then we tried to convey the message to elders through schoolchildren. But some people continued with this habit. So we decided to try this," said sarpanch Khushi Bai.

A 12-member committee, which includes women, was formed to spot people who defecate in the open.

CONTINUED ON P7

ILLUSTRATION: ABHIMANYU SINHA

चौथिया पंचायत निर्मल भारत अभियान में सराहनीय कदम

ग्रामीणों ने खुले में शौच जाना बंद किया

नाम सार्वजनिक होने के बाद खुले में शौच जाने से कतराने लगे लोग

बैतूल (मप्र) 13 जनवरी (भाषा)। स्वच्छता अभियान के तहत गांव को गंदगी से मुक्त करने के एक नायाब नुस्खे के तहत लोगों ने गांव में खुले में शौच जाने वालों के नाम लाउड स्पीकर में सार्वजनिक करना शुरू कर दिया है और इसके बहुत अच्छे परिणाम सामने आए है।

पिछले आठ दिनों से बैतूल जिले के मुलताई विकासखंड के गांव चौथिया में सुबह पांच बजे से यह सिलसिला शुरु हो जाता है। सुबह–सुबह लाउड स्पीकर पर अपना नाम सुनकर शर्मसार होने वाले ग्रामीणों ने अब शौचालय का उपयोग करना शुरू कर दिया है। 230 मकानों की बस्ती चौथियां की जनसंख्या 1400 के करीब है।

पंचायत ने गांव के 224 घरों में शौचालय बनाए हैं। शेष ने अपने खर्च पर शौचालय बना लिए हैं। इसके बाद भी गांव के लगभग 200 लोगों ने खुले में शौच जाना नही छोड़ा। इस समस्या को दूर करने के लिए पूर्व सरपंच कचरू बारंगे ने गांव के दस जागरूक युवाओं की टीम बनाई। टीम में सात पुरुषों और तीन महिलाओं को रखा है। टीम के सदस्य रोजाना सुबह पांच बजे से गांव में भ्रमण करते है और महिला सदस्य पंचायत भवन में बैठती है।

पुरुष सदस्य भ्रमण के दौरान खुले में शौच जाने वाले दिखाई देने पर उनका नाम मोबाइल से पंचायत भवन में बैठी महिलाओं को देते हैं और महिलाएं लाउड स्पीकर से खुले मे शौच जाने वालों के नाम सार्वजनिक करती है। टीम का यह उपाय कारगर साबित हो रहा है। मात्र आठ दिन में खुले मे शौच जाने वालों की संख्या घटकर 10–12 रह गई है।

लाउडस्पीकर पर नाम लेने से खुले में शौच जाने वालों ने पहले तो इसका विरोध किया लेकिन जब गांव में गंदगी कम होने लगी तो ग्रामीण सहयोग करने लगे है। गांव के मौजी बारंगे ने बताया कि खुले में शौच जाने की आदत बन गई थी लेकिन माइक पर बार बार नाम आने पर शर्म महसूस होने लगी। ललिता परिहार और चौती पवार ने बताया कि अब उनका नाम लाउडस्पीकर पर सुनाई नही देता है। अब ये लोग किसी महिला का नाम सुनाई आने पर उसे भी खुले में शौच नही जाने की सलाह देते हैं।

पूर्व सरपंच कचरु बारंगे ने बताया कि शौचालय होने के बाद भी ग्रामीण खुले में शौच जाते थे। बार–बार समझाने के बाद भी जब खुले में शौच जाने वालों की संख्या कम नहीं हुई तो उनके नाम सार्वजनिक करने का विचार आया। इसके लिए 50 रुपए किराए से पंचायत भवन में लाउडस्पीकर लगाया गया और खुले में शौच जाने वालों के नाम रजिस्टर में लिखने लगे।

टीम के कचरू बारंगे, मंचित बारंगे, छाया बारस्कर और राधा बारंगे ने बताया कि लगातार प्रयास करने पर अधिकतर लोगों ने खुले में शौच जाना बंद कर दिया है। उन्हें तुलसी का पौधा भेंट कर सम्मान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि खुले में शौच जाने वालों का नाम तब तक सार्वजनिक करते रहेंगे जब तक कि गांव के सभी लोग खुले में शौच जाना बंद नही कर देते।

सीइओ, जनपद पंचायत मुलताई मनीष शेंडे ने कहा कि चौथिया में खुले में शौच करने वालों को रोकने के लिए बनी इस टीम का कार्य सराहनीय है। टीम के सदस्यों के सहयोग से स्वच्छता अभियान के समन्वयक प्रकाश चौधरी को भी रोजाना गांव भेजा जा रहा है। ग्रामीणों में जागरूकता आ रही है और उम्मीद है कि जल्द ही गांव के सभी लोग शौचालय का उपयोग करने लगेंगे।